इकाई 2. श्री हर्ष - व्यक्तित्व एवं कृतियों का विस्तृत परिचय

इकाई की रुपरेखा

2.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य से सम्बधित यह दूसरी इकाई है। इससे पूर्व की इकाई में आपने महाकवि भारवि के विषय में अध्ययन किया और उनके प्रसिद्ध महाकाव्य किरातार्जुनीयम् के विषय में जाना तथा उनकी भाषा-शैली से परिचित हुए।

इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते हैं कि श्री हर्ष का व्यक्तित्व क्या है श्री हर्ष का जीवन चरित्र का वर्णन बाणभट्ट के ग्रन्थ हर्ष चरितमें प्राप्त होता है। इनके पिता प्रभाकर वर्धन तथा माता यशोमती है। ये अपने पिता के दूसरे पुत्र इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम राज्य वर्धन था। ‘ राज्य श्री ’ नाम की इनकी बहिन योग्य विदुषी थी। बाल्यकाल में इन्हें समुचित शिक्षा की व्यवस्था की गयी थी। महाराजा हर्ष एक महान कवि थे। उन्होने स्वयं भी अनेक रमणीय और सरद ग्रन्थों की रचना कर सरस्वती के विपुल भण्डार को भरा है। इनका व्यक्तित्व ही महान था। श्री हर्ष एक महान दानी थे। श्री हर्ष ने बड़ी भारी सम्पति कवियों को दे डाली। श्री हर्ष महा उदार और सरल हृदय वाले थे। उन्होने तीन ग्रन्थों का निर्माण किया है।

इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते हैं कि श्री हर्ष का व्यक्तित्व क्या है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

- श्री हर्ष के व्यक्तित्व बाता सकेंगे।
- श्री हर्ष एक महान कवि थे ,सिद्ध कर सकेंगे।
- श्री हर्ष के कितने ग्रन्थ थें , उपका परिचय बता सकेंगे।
- इस इकाई का सारांश लिख सकेंगे।

2.3 श्री हर्ष व्यक्तित्व एवं कृतियो का विस्तृत परिचय

बाणभट्ट के ‘हर्षचरित‘ तथा ह्वेनसांग के यात्राविचरण से हमें स्फुटरूप से ज्ञात है कि हर्षवर्धन ‘हूण-हरिण-केसरी‘ प्रभाकरवर्धन तथा यशोमती के पुत्र थे। ये अपने पिता के दूसरे लड़के थे। इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम राज्यवर्धन था। ‘राज्यश्री‘ नाम की इनकी बहिन योग्य विदुषी थी। बाल्यकाल में इन्हें समुचित शिक्षा दी गई थी। पिता ने पंजाब में रहनेवाले हूणों को पराजित करने के लिए राज्यवर्धन के साथ इन्हें भेजा। राज्यवर्धन आगे जाकर शत्रुओं का विनाश कर रहे थे, इधर हर्षवर्धन आखेट आदि मनोरंजन के साथ-साथ शत्रुओं का पीछा कर रहे थे। इतने में पिता की अस्वस्थता के दुःखद समाचार को लिए हुए एक दूत आया। राजधानी लौट आने पर हर्ष ने पूज्य पितृदेव को मृत्युशैय्या पर पाया। प्रभाकरवर्धन ने हर्षवर्धन को ‘निरवशेषाःशत्रवो नेयाः‘ का उपदेश देकर इस असार संसार से विदाई ली। मन्त्रियों के कहने पर ज्येष्ठ भ्राता के आगमन में कुछ विलम्ब जानकर हर्षवर्धन ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। कुछ समय के अनन्तर राज्यवर्धन ने आकर शासन भार अपने ऊपर लिया, परन्तु वह स्वयं ही वडीय

नरेश शशांक की कुटिल नीति का शिकार बन गया। शशांक ने विश्वास दिला कर राज्यवर्धन को मार डाला। हर्ष के हृदय में भ्रातृवध का समाचार सुनकर प्रतिहिंसा की प्रबल अग्नि प्रज्वलित हो उठी। हर्षवर्धन ने यथासमय शशांक का विनाश कर बंगाल को अपने राज्य में मिला लिया। रिक्त सिंहासन की बागडोर हर्ष-वर्धन में अपने सुमृद्धतथा राज्यकाल 606 ई0 से लेकर 647 ई0 तक माना जाता है।

महाराजा हर्षवर्धन केवल वीर-लक्ष्मी के उपासक न थे, अपितु ललित कलाओं के भी अत्यन्त प्रेमी थे। आपकी सभा को अनेक गुण और गौरव युक्त विद्वान् सर्वदा सुशोभित किया करते थे। बाणभट्ट, मयूरभट्ट तथा मातंगदिवस कर जैसे कवियों से मण्डित इनकी सभा साहित्य-संसार में सदा प्रख्यात रही है। सुना जाता है कि दिवाकर का जन्म नीच (चाण्डल) जाति में हुआ था, परन्तु ये अपनी गुणगरिमा से बाण और मयूर के समान ही राजा के आदरपात्र थे। इस बात को राजशेखर ने सरस्वती के प्रभाव को दिखलाते हुए बड़े ही अच्छे ढंग से कहा है- अहो प्रभावो वाग्देव्या यन्माङदिवाकरः।

श्रीहर्षस्याभवतृ सभ्यः समो वाणमयूरयोः ।।

दशवीं शताब्दी में उत्पत्र होने वाले महाकवि पद्मगुप्त ने अपने ‘नवसाहसांकचरित‘ महाकाव्य में महाराज हर्ष की सभा में बाण और मयूर की उपस्थित का वर्णन इस प्रकार किया हैः-- स चित्रवर्णविच्छितिहारिणोरवनीपतिः।

श्रीहर्ष इव संघटचके बाणमयूरयोः ।।

महाराज हर्ष केवल कवि और पण्डितों के ही आश्रयदाता और गुणग्राही न थे , बल्कि उन्होंने स्वयं भी अनेक रमणीय और सरद ग्रन्थों की रचना कर सरस्वती के विपुल भण्डार को भरा है। इस बात को हम अच्छी तरह से कह सकते हैं कि महाकवि कालिदास की यह सरल सूक्ति ‘‘निसर्गभित्रस्पदमेकसंस्थमस्मिन् द्वयं श्रीश्च सरस्वती चं महाराज हर्ष के विषय में अच्छी तरह से चरितार्थ होती है। इस भारतवर्ष में विकमादित्य , शूद्रक , हाल प्रभृति अनेक विद्या के उपासक राजा हो गये है , परन्तु उन सब में महाराज हर्ष (हर्षवर्धन) अद्वितीय हैं। महाकवि पीयूषवर्ष जयवेद ने अपने ‘प्रसन्नराघव‘ नाटक में महाराज हर्ष को कविताकामिनी का हर्ष (हर्षोहर्षः) कहा है। उन्होनें वाणभट्ट के साथ हर्ष का नामोल्लेख भी किया है। विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में उत्पन्न होने वाले सोड्ढल ने अपनी ‘उदयसुन्दरीकथा‘ नामक चम्पू में श्रीहर्ष की , सरस्वती को हर्ष प्रदान करने के कारण, ‘श्रीर्हर्ष‘ कहकर प्रशंसा की हैः--

श्रीहर्ष इत्यवनिवर्तिषु पाथिवेष नाम्नैव केवलमजायत वस्तुतस्तु।
‘श्रीहर्ष‘ एष निजसंसदि येन राज्ञा सम्पूजितः कनककोटिशतेन बाणः ।।

इसी तरह दामोदर गुप्त ने ‘कुटनीमत‘ नामक ग्रन्थ में ‘रत्नावली‘ का नाम लेकर संकेत किया है। यह नाटिका किसी राजा के द्वारा बनाई गई है और उसके निर्माता महाराज हर्ष है, ऐसा कहते हुए उन्होंने उनकी हर्ष की काव्यचातुरी की अत्यन्त प्रशंसा की है इत्सिङ नामक चीनी बौद्व परिव्राजक अपने धर्मग्रन्थों को पढ़ने की इच्छा से हर्ष की मृत्यु के बाद भारतवर्ष में आया था। उसने अपने यात्रा विवरणात्मक ग्रन्थ में महाराज हर्ष को ‘नागान्द‘ नाटक का रचयिता होना

स्पष्ट ही लिखा है। उसने यह लिखा है:-- 'राजा शीलादित्य (हर्ष) ने बोधिसत्व जीमूतवाहन की आख्यायिका को नाटकरूप में परिणत किया और उस नाटक का संगीतादि सामग्री के साथ नंटों के द्वारा अभिनय कराया।' इस प्रमाण से स्पष्ट है कि महाराज हर्ष ने 'नागान्द' नाटक का निर्माण किया था , परन्तु इन प्रमाणों के होते हुए भी जो विद्वान् महाराज हर्ष के ग्रन्थ-रचयिता होने में सन्देह करते है वे बाणभट्ट के इस कथन पर विचार कर अपने सन्देह को दूर कर लें। श्री बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में दो बार राजा (श्री हर्ष) की काव्य-व्याकरणचातुरी की प्रशंसा की है। बाणभट्ट का यह कथन हर्ष की काव्य-चातुरी को प्रकट कर रहा है। 'अस्य कवित्स्य वाचो न पर्याप्तो विषयः'। इस प्रकार से बाणभट्ट ने हर्ष की काव्य रचना की चतुरता को स्पष्ट ही प्रकट किया है। इन ऊपर लिखित प्रमाणों से हमें विश्वास होता है कि महाराज हर्षवर्धन अच्छे कवि थे एवं कविता करने में खूब दक्ष थे। श्रोहर्ष का ग्रन्थ मिलते है--रत्नावली , नागानन्द और प्रियदर्शिका। साहित्य-संसार में रत्नावली के रचयिता के सम्बन्ध में बड़ा आन्दोलन हो चुका है। इस बड़ी गड़बड़ी का मूल कारण मम्मट के काव्यप्रकाश का एक वाक्यांश है। मम्मट ने काव्य के प्रयोजनों में अर्थप्राप्ति भी एक प्रयोजन माना है--हजारों महाकवि कविता-देवी की पूजा कर लक्ष्मी के कृपापात्र बन गये हैं। उदाहरणार्थ , धावकादि कवियों ने हर्षवर्धन से असंख्य धन पाया (श्री-हर्षादेःधावकादीनामिव धनम्) । काव्यप्रकाश के कतिपय टीकाकारों ने इससे यह अर्थ निकाला है कि घावक ने रत्नावली की रचना हर्षवर्धन के नाम से करके असंख्य सम्मति पाई। काव्यप्रकाश के किसी-किसी काश्मीरी प्रति में धावक के स्थान पर बाण का नाम उल्लिखित है , जिसके आधार पर कितने ही विद्वान् बाणभट् पर ही रत्नावली के कर्तृत्व का भार आरोपित करते है। परन्तु ये सब आधुनिक विद्वानों की अनिश्चित कल्पनायें हैं।

काव्य-प्रकाश के उल्लेख का यही आशय है कि श्रीहर्ष ने बड़ी भारी सम्पति कवियों को दे डाली। श्रीहर्ष जैसे उदाराशय तथा महादानी नरेश के लिये यह बात असम्भव नहीं जान पडती। जब असंख्यों ब्राहम्ण , भिक्षु तथा जैनों का आदर होता था तथा उनको प्रशंसनीय दान मिलता था , तब गुणग्राही हर्ष के लिये उसकी कीर्तिलता को पल्लवित करनेवाले कवियों को दान देने में--आदर करने में--भला संकोच कैसे हो सकता है ? काव्यप्रकाश के उल्लेख का प्रकरणगम्य तात्पर्य यही है। अनेकों अर्वाचीन तथा प्राचीन कवियों ने श्रीहर्ष के समीचीन कवि-समाश्रय की शतशः प्रशंसा की है। अभिनन्द कवि ने मम्मट के कथन को दुहराया है**:-- श्रीहर्षों विततार गद्यकवये बाणाय वाणीफलम्।** एक दूसरे काव्य -मर्मज्ञ ने ठीक ही लिखा है:--

हेम्नो भारशतानि वा मदमुचां वृन्दानि वा दन्तिनां
श्रीहर्षण समर्पितानि कवये बाणय कुत्राद्य तत्।
या बाणेन तु तस्य सूक्तिनिकरैरूटङिताः कीर्तय-
स्ता: कल्पप्रलयेऽपि यान्ति न मनांग मन्ये परिम्लानताम्।।

भावार्थ यह है कि हर्ष ने बाणभट्ट को हजारों दिग्गज तथा असंख्य सम्पति दे डाली , परन्तु आज उनका नामोनिशान नहीं हैं ; किन्तु बाण ने हर्ष की कीर्ति को काव्यरूप में जो जड़ दिया

वह कराल काल के फेर में पड़कर भी मलिन नहीं हो सकती। इससे स्पष्ट है कि ये सब उल्लेख हर्ष के आश्रयदान तथा कवि सत्कार को लक्षित करते है। हर्ष की स्वयं दर्शन में अच्छी गति थी। वह ह्वेनसांग के संसर्ग से बौद्व दर्शन का एक अभिज्ञ पण्डित बन गया था। ऐसे उदार दानी तथा विद्वान् सम्राट का ऊदार अपने नाम से काव्य गढ़ने की कालिमा पोतना काव्यजगत् में अत्यन्त कलुषित कार्य है। उसका अपने आश्रित कवियों से सहायता लेना असंभव कार्य नही प्रतीत होता , उसको इन नाटकों के कर्तृत्व से वंचित करना हर्ष के महान् गुणों की अवज्ञा करना है। एक क्षण के लिए बाण या घावक को रत्नावली का कर्ता मान भी लिया जाय , परन्तु नागानन्द तथा प्रिय-दर्शिका का कर्तृत्व तो हर्ष से ही सम्बद्व है। कोई भी आलोचक बाणभट्ट को नागानन्द का कर्ता मानने को उद्यत नहीं है। सर्वसम्मति से इस नाटकत्रय की रचना हर्ष की लेखनी से हुई है। अत एव रत्नावली के कर्तृत्व को बाण पर आरोपित करना निन्दनीय जान पड़ता है। पूर्वोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इन तीन नाटकों की रचना स्वंय सम्राट् हर्षवर्धन ने की।

ग्रन्थ

इनकी तीन रचनायें है--(1) प्रियदर्शिका , (2) रत्नावली तथा (3) नागानन्द। ये तीनों रूपक एक ही लेखक की रचनायें है ; इसमें सन्देह करने के लिए स्थान नहीं है। तीनों में घटनाओं का आश्चर्यजनक साम्य है। रत्नावली में सागरिका अपने चित्तविनोद के लिये राजा का चित्र खींचती है। नागानन्द में जीमूतवाहन उसी उद्देश्य से मलयवती का चित्र बनाता है। दोनों स्थानों पर चित्रों के द्वारा ही पात्रों के स्निग्ध हृदय तथा प्रणय की कथा का परिचय दर्शकों का मिलता है। रत्नावली में अपमानित होने पर सागरिका अपने गले को लतापाश से बाँधकर प्राण देने का उद्योग करती है। नागानन्द में भी यही घटना है—नायिका मलयवती प्रणय में अनादृत होने से अपने गले को जकड़ कर मरने का प्रयास करती है। दोनों स्थानों पर नायक के द्वारा उनके प्राणों की रक्षा होती है। इतना ही नहीं , बहुत से पद्य इनमें परस्पर उद्धृत किये गए हैं। फलत: ये तीनों ही लेखक की लेखनी की सुचारु रचनाये है। इन रुपकों में लेखनकर्म का भी निर्णय अन्तरंग परीक्षा के बल पर किया जा सकता है। प्रियदर्शिक तथा रत्नावली दोंनों ही प्रणय नाटिकायें है और एक ही कथानक -उदयन के कथानक - से सम्बन्ध रखती है। प्रिय - दर्शिका में घटना का विन्यास बहुत ढंग का है। रत्नावली में हम घटनाओं के प्रस्ताव में तथा नायिका के प्रणवर्णन में सुधार पातें हैं , जो निश्चयेन 'रत्नावली' को परवर्ती सिद्व कर रहा है। नागानन्द के अंतिम नाटक होने का प्रमाण उसके अभिनेय विषय की गम्भीरता तथा महनीयता है। इसके भी तीन अंको में प्रणय का वर्णन है, परन्तु यहाँ कवि विवाह-सम्बन्ध को प्रतिष्ठित करने के लिए गंधर्व-विवाह की पद्धति अपनाता है, जहाँ परवर्ती नाटिकाओं में द्वितीय विवाह की सिद्धि प्रथम विवाहिता राजमहिषी की स्वेच्छा पर वह अवलम्बित करता है। श्रीहर्ष का चित अब सांसारिक प्रपंचों से ऊब गया है और वह प्रणय से शान्ति की ओर जाता है। उसकी जीवन-सन्ध्या के अनुरूप ही शान्त रसात्मक नागानन्द का प्रणयन है, जहाँ राजाओं के भोगविलासमय नगर से हटकर प्रधान घटनायें आश्रम के शान्त वातावरण में ही घटित होती है।

वस्तुविन्यास

रत्नावली संस्कृत-साहित्य की प्रथम नाटिका है और बहुत ही सफल नाटिका है। शास्त्रीय पद्धति से नाटिका नाटक तथा प्रकरण के उद्धृत एक सुन्दर नाटकिय रचना है जिसमें नायक 'नाटक' की भाँति इतिहास तथा परम्परा में प्रख्यात होता है तथा कथानक 'प्रकरण' के तुल्य कवि-कल्पित रहता है। दोनों नाटिकाओं का नायक कौशाम्बी-नरेश वत्सराज उदयन है, जो प्राचीन इतिहास में अपने रोमांचक प्रणय के कारण पर्याप्त प्रख्यात है। दोनों का विषय कवि-कल्पित है। नाटिका की शास्त्रीय कल्पना कालिदास के 'मालविकाग्निमिंत्र' के आधार पर गढ़ी गयी प्रतीत होती है। इसलिए इन नाटिकाओं के ऊपर कालिदास के इस नाटक का प्रचुर प्रभाव खोजा जा सकता है, तथापि इनमें पर्याप्तरूपेण मौलिकता है।

प्रियदर्शिका का सम्बन्ध भी उदयन के कथानक के साथ है। यह भी चार अंको की एक प्रणयनाटिका है। इसकी वस्तु उतनी सुन्दरता के साथ उपन्यस्त नहीं है। उसमें उतनी चुस्ती तथा आकर्षण नहीं है। वत्स का सेनापति विजयसेन दृढ़ध्यकेतु की पुत्री प्रियदर्शिका को दरबार में लाता है तथा आरण्यकाधिपति विन्ध्यकेतु की कन्या रूप में वहाँ रख देता है। महाराज उसे वासवदता को सौंप देते है, जो उसकी शिक्षा का प्रबन्ध करती है। द्वितीय अंक में राजा उदयन विदूषक के साथ उपवन में घूमने जाते है, जहाँ फूल चुनने के लिए आई प्रियदर्शिका कमलों पर उड़ते हुए भौंरों से परेशान होती है और बिल्ला उठती है। राजा लताकुंज से प्रकट होकर उसे बचाया है। यहीं नायिका का प्रथम दर्शन नायक को होता है तथा अनुराग का बीज इतनी देर में कवि यहाँ बोता है। तृतीय अंक में गर्भांक का सुन्दर निवेश है। मनोरमा (प्रियदर्शिका की सखी) तथा विदूषक की युक्ति से सम्मिलित कल्पित किया जाता है। वासवदत्ता उदयन-चरित से सम्बद्व नाटक का अभिनय करना चाहता है जिसमें मनोरमा को उदयन बनाया है और आरण्यका (प्रिय-दर्शिका) को वासवदत्ता। बड़े कौशल से मनोरमा के स्थान पर स्वंय उदयन ही पहुँच जाता है। वासवदत्ता को संदेश होता है और मनोरमा की सारी चाल पकड़ ली जाती है। चतुर्थ अंक में वासवदत्ता इसलिए चिन्तित है कि उसका मौसा दृढ़वर्मा कलिंगराज के द्वारा बन्धन में पड़ा हुआ है। उदयन उसे छुड़ाने के लिए अपनी सेना भेजता है। दृढ़-वर्मा का कंचुकी आता है और प्रियदर्शिका को पहचान लेना है जिससे वासवदता उदयन के साथ उसका विवाह करा देती है।
रत्नावली में चार अंक है। प्रथम अंक के आरम्भ में राजा का प्रधानामात्य यौगन्धरायण दैव की अनुकूलता तथा सहायता का संकेत करता है जिसके कारण उदयन के साथ परिणय के लिए आनेवाले सिंहलेश्वर की राजकन्या रत्नावली जहाज के डूब जाने पर भी बच जाती है तथा वह मन्त्री के पास किसी सामुद्रिक वनिये के द्वारा लाई जाती है। मन्त्री उसे सागरिका के नाम से वासदता की देख-रेख में रख आता है। कामदेव के उत्सव के प्रसंग में वासवदत्ता कामवपुः राजा उदयन की ही सद्यः पूजा करती है जिसे पेड़ो की झुरमुट से छिपे तौर से सागरिका प्रथम वार देखती है, उन्हें कामदेव समझती है तथा प्रणय के मघुर भाव के अंकुरण के लिए पात्र बनती है। द्वितीय अंक में सागरिका अपनी सखी सुसंगता के साथ चितविनोद के लिए राजा का चित्र

अंकित करती है जिसके पास सुसंगता सागरिका का ही चित्र खींचकर उसे रतिसनाथ बना देती है कुछ गुप्त प्रणय की भी चर्चा है। वाजिशाल से एक बन्दर के तोड़कर भागने से महल में कोहराम मच जाता है। इसी हल्लागुल्ला में ये दोनों भाग खड़ी है। चित्रफलक वहीं छूट जाता है और राजा के हाथ पड़ने से वह गुप्त प्रेम के प्रकटन का साधन बनता हैं। इस प्रेम के प्रसारण में सारिका का भी कुछ हाथ हैं। तृतीय अंक इस नाटिका का हृदय हैं तथा कवि की मौलिक सूझ का उज्ज्वल उदाहरण हैं। वेश-परिवर्तन से उत्पन्न भ्रान्ति के कारण जायमान घटना- सांकर्य बड़ा ही सुन्दर हैं। तथा शेक्सपीयर के 'कॉमेडी आफ एरर्स' नामक नाटक के समान हैं। सागरिका वासवदत्ता का तथा सुसंगतता का दासी का´चनमाला का वेश धारण कर राजा से पूर्व निश्चय के अनुसार मिलने आती हैं, परन्तु असली वासवदत्ता के इनसे पहले ही आ जाने के कारण सारा गुड़ गोबर हो जाता है। असली और नकली का विभेद बड़ी ही हास्यजनक स्थिति पैदा करता हैं। जिससे अपमानित मानकर सागरिका लतापाश के द्वारा मरने जाती हैं, परन्तु राजा उसे बचाता हैं। चतुर्थ अंक में जादूगर के 'अग्निदाह' का प्रभाव शाली दृश्य हैं। सागरिका भूगर्भ में कैद कर रखी गयी हैं। वह वहाँ से बचा कर सभा में लायी जाती हैं जहाँ उसके पिता के मन्त्रि वसुभूति तथा कंचुकी वाभ्रव्य उसे विदूषक के गले में लटकने वाली 'रत्नावली' की सहायता से पहचानते हैं। तथा वासवदत्ता स्वयं प्रसन्न होकर अपनी भगिनीभूता रत्नावली से राजा का विवाह करा देती हैं। यही मंगलमय अवसान हैं।

नागानन्द में पाँच अंक हैं। यह किसी बौद्ध अवदान के ऊपर आश्रित हैं। प्रथम अंक में जीमूतकेतु का आश्रम में जाना तथा उनके पुत्र जीमूतवाहन का भी पितृदत्त राज्य का परित्याग कर वहीं सेवार्थ जाना और गौरी के मन्दिर में मलयवती के वीणावादन से उसके हृदय के अनुराग का संचार वर्णित हैं। द्वितीय अंक में जीमूतवाहन तथा मलयवती के आनन्ददायक विवाह का विस्तृत वर्णन हैं। तृतीय अंक भी विवाह-कथा से ही सम्बद्ध हैं। चतुर्थ अंक में राज कुमार जीमूतवाहन का समुद्रतीर आना तथा प्रतिदिन एक नाग का गरूड़ के लिये भोजन बनने की बात वर्णित हैं। उस दिन अपनी माता के इकलौते पुत्र शंखचूड़ की बारी थी। उसकी माता के कारण रोदन से द्रवीभूत जीमूतवाहन स्वयं उसके स्थान पर गरूड़ का भोजन बनने जाता हैं, शंखचूड़ राजी नहीं होता हैं, परन्तु उसकी क्षणिक अनुपस्थित में जीमूत अपने शरीर को रक्तवस्त्र में ढँककर शिला पर बैठ जाता हैं। गरूड़ आकर अपनी चोंच में उसे पहाड़ के शिखर पर उठा ले जाता हैं तथा खाता हैं। जीमूत दृढ़ हैं, उसके इस त्याग पर पुष्पवृष्टि होती हैं। पंचम अंक में माता-पिता व्याकूल होकर जीमूत के समाचार के लिये सेवक भेजते हैं। शंखचूड़ से पूरी घटनाओं का पता चलता हैं। गरूड़ को भी इस नाग की दृढ़ता पर आश्चर्य होता हैं। वह पूरा हाल पूछता हैं तथा नागों को न खाने की प्रतिज्ञा कर वह जीमूत के खाने से विरत होता हैं। मंगल के साथ नाटक समाप्त होता हैं। रत्नावली की प्रसिद्धि अपने गुणों के कारण प्राचीनकाल से ही अक्षुण्ण चली आ रही हैं। शास्त्रीय पद्धती पर निर्मित एक सम्पूर्ण रूपक के रूप में इसकी प्रख्याति का पता हमें 'दशरूपक' के विशिष्ट विश्लेषण से चलता हैं। धनंजय ने इसकी कथावस्तु का विस्तृत तथा विशद विश्लेषण 'दशरूपक' में किया हैं। विश्वनाथ कविराज ने भी सन्धियों तथा सन्ध्यंकों के

दृष्टान्त देने के लिए इसे ही विशेषतया चुना हैं । यह न समझना चाहिये कि नाटकीय विधिविधानों को प्रदर्शित करने के लिए ही हर्ष ने रत्नावली की रचना की।

यदि ऐसा होता तो यह नाटिका साधारण कोटि की ही ठहरती हैं, परन्तु तथ्य यह नहीं हैं। हर्ष ने एक आदर्श कथानक को लेकर एक भव्य रूप दिया हैं जिसके विश्लेषण करने से नाटयशास्त्र के अनुसार वस्तु की पाँचों सन्धियाँ यहाँ सपस्ट रूप से उपस्थित हैं। रत्नावली नाटिका का बीज वत्सराज के द्वारा रत्नावली की प्राप्ति का कारणभूत अनुकूल देव हैं, जो राजा के अनुराग को बढ़ाने में सहायक होता हैं। इस प्रकार प्रथम अंक में अनुराग-बीज का प्रक्षेप हैं और यहाँ मुख-सन्धि भी वर्तमान हैं। बिन्दु का उपक्षेप 'अस्तायास्तसमस्तभासी नभसः पार प्रयाते रवौ' वाले श्लोक में हैं। प्रतिमुखसन्धि द्वितीय अंक में आती हैं। जहाँ वत्सराज और सागरिका के मिलन के लिये उद्योगशील सुसंगता और विदुषक उस अनुराग बीज को पूर्णतया जान लेते हैं। तथा वासवदत्ता भी चित्रफलक के वृतान्त से उस अनुराग का अनुमान करती हैं। इस प्रकार दृश्य और अदृश्य रूप से विकसित होने के कारण इस अंक में प्रतिमुख सन्धि हैं। गर्भ सन्धि तृतीय अंक में हैं, जहाँ वेश बदलकर सागरिका के अभिसरण से राजा के हृदय में उसकी प्राप्ति की आशा बंध जाती हैं । परन्तु वासवदत्ता के अड़ंगा लगा देने से उस आशा पर भी पानी फिरा हैं । अवमर्शसन्धि रत्नावली के चतुर्थ अंक में आग लगने तक के कथानक तक हैं । क्योंकि यहाँ वासवदत्ता की प्रसन्नता हो जाने से रत्नावली की प्राप्ति में किसी प्रकार का विघ्न दृष्टिगोचर नहीं होता हैं। निर्वहणसन्धि चतुर्थ अंक के अर्ध में हैं, जहाँ वसुभूति तथा बाभ्रव्य के साक्षात् प्रमाण एवं विदूषक के गले में विद्यमान रत्नावली को देखकर सागरिका के सच्चे रूप का बोध होता हैं। तथा राजा का उससे मिलन सम्पन्न होता हैं।

पात्रसमीक्षण

चरित्र के चित्रण में हर्ष ने अपनी स्वाभाविक निपुणता प्रदर्शित की हैं। वे स्वयं राजा थे और इसीलिये वे दरबार से सम्बद्ध जीवन के चित्रण तथा कथानक के विन्यास में स्वाभाविक कौशल दिखलाते हैं। उदयन का चित्रण धीरललित नायक के रूप में बड़ा सुन्दर हैं । वह अपने प्रधानामात्य यौगंधरायण के ऊपरअपने राज्यसंचालन का भार रखकर स्वयं कला तथा प्रणय की आसक्ति में अपना जीवन बिताता हैं। उसके सौन्दर्य-प्रेम का परिचय 'कामोत्सव' के अवसर पर मिलता हैं। उसका चित्रण 'रोमांचक प्रणयी' (रोमान्टिक लवर) के रूप में हर्ष ने बड़ी दक्षता से किया हैं।

नाटिका की नायिका रत्नावली के रूप में बहुत सुन्दर तथा चरित्र में बहुत ही उदात्त हैं। वह सिंहलेश्वर की दुहिता हैं। और इस आभिजात्य का उसे पूर्ण अभिमान हैं। उसके चरित्र में एक छोटा सा भी धब्बा नहीं हैं। उसका प्रत्येक कार्य औदात्य के द्वारा प्रेरित होता हैं। जब उसे उदयन का पूरा परिचय मिल जाता हैं कि यह वही नरेन्द्र हैं जिसके लिये पिता ने मुझे दिया था, तभी वह प्रणय में अग्रसर होती हैं। यह प्रणय स्वाभाविकता तथा मर्यादा के बिलकुल भीतर रहता हैं। वह अपने दासी भाव से भिन्न नहीं हैं। वह अपनी स्वामिनी की पूर्ण सेविका होने के

नाते उसके प्रति किसी प्रकार अनुचित कार्य करने से सदा परांगमुख रहती हैं। संकेत-स्थल के लिये भी वह स्वयं अग्रसर नहीं होती , प्रत्युत् विदुषक तथा सुसंगता के कारण ही वह इसमें प्रवृत कराई जाती हैं। महारानी इस वृतान्त से परिचित हो गई हैं, यह जानकर वह इतनी लज्जित होती हैं कि अपना प्राण ही दे देना चाहती हैं। वह इसे अपनी मर्यादा के ऊपर घोर प्रहार समझती हैं। रत्नावली का प्रणय रोमान्चक होकर भी संयत तथा मर्यादित हैं। दसके हृदय में राजा के लिये प्रेम का परिचय हमें चित्रफलक के वृतान्त से भली-भाँति चलता हैं। उसके कार्यकलाप मर्यादा तथा आभीजात्य के सौरभ से सुगन्धित हैं। फलतः रत्नावली का चरित्र बड़ा ही उदात्त , प्रणय पूर्ण तथा कोमल हैं।

इसके विपरीत वासवदत्ता के चरित्र में प्रभुत्व तथा पूर्ण राज्य हैं। वह जानती हैं तथा अभिमान रखती हैं कि वह उदयन की पट्टमहिषी हैं। राजा भी उसके साथ अधिकार पूर्ण प्रणय के आगे अपना मस्तिक झुकाता हैं और इसकी रट लगाये रहता हैं कि देवी को प्रसन्न करने के अतिरिक्त सागरिका से संगम का अन्य कोई उपाय नहीं हैं। (देवी प्रसादनं मुक्तवा नास्ति अन्योपायः)। वह इतनी प्रभुत्व शालिनी हैं कि अपराध करने पर वह अपनी दासियों को कौन कहै, राजा के 'नर्मसचिव' विदूषक को भी कारागार में डाल देती हैं। 'प्रभूता सर्वतोमुखी' की जीती जागती प्रतिमा होने पर भी वह कोमल हैं, क्रूर नहीं। राजा की वास्तविक हितचिन्तक हैं, विद्वेषक नहीं। वह सचमुच प्रतिप्राणा हैं और प्रभूता की भावना इसी की बाह्य अभिव्यक्ति हैं। वासवदत्ता के चरित्र के संदर्भ में रत्नावली का चरित्र कोमलता , मृदुता तथा आभिजात्य के आलोक से पूर्णरूपेण आलोकित होता हैं।

नागानन्द का नायक जीमूतवाहन अपने आदर्श चरित्र के लिये सदा स्मरणीय रहेगा । वह पितृभक्ति का उज्ज्वल प्रतीक हैं। जो विशाल साम्राज्य के वैभव तथा समृद्धि की उपेक्षा करके अपने माता-पिता की सेवा के निमित्त जंगल में जाकर रहता हैं। वह कल्पवृक्ष के दान के द्वारा अपने परोपकार को सिद्ध करता हैं। वह साधारण पार्थिव जीव हैं; मलयवती के प्रेम से यही सिद्ध होता हैं। परोपकार की वेदी पर आत्मसमर्पण उसके जीवन का महान उद्देश्य हैं। वह दृढनिश्चयी हैं, और उसके निश्चय तथा स्वार्थत्याग का सद्यः प्रभाव क्रूरहृदय नृशंस गरूड़ पर इतना अधिक पड़ता हैं कि वह उसी दिन से हिंसा-व्यापार से विरत हो जाता हैं। नागानन्द के मुख्य रस के विषय में आलोचको में मतभेद हैं। कतिपय आलोचक इसमें 'शान्तरस' की प्रधानता मानते हैं, परन्तु अभिनव गुप्त ने इसे 'दयावीर' का ही एक समुज्ज्वल दृष्टांत माना हैं। स्वयं उनके पिता के मुख से जीमूतवाहन के शोभन गुणों का यह मंजुल वर्णन उद्धृत हैं -

निराधारं धैर्ये कमिव शरणं यातु विनयः
क्षमः क्षान्ति वोढुं क इह? विरता दानपरता।
हतं नूनं सत्यं व्रजतु कृपणा क्वाद्य करूणा
जगज्जातं शुन्यं त्वयि तनय! लोकान्तरगते।। नागानन्द 5/30

राजा जीमूतकेतु अपने पुत्र की मृत्यु से शोकोद्विग्न होकर कह रहा हैं- हैं पुत्र ! तुम्हारे दूसरे लोक चले जाने पर - स्वर्गवासी होने पर- धैर्ये बिना आधार का हो गया। विनय अब किसके शरण में

जाय? अब क्षमा को कौन धारण कर सकता हैं। अब दानशीलता उठ गई। सच मुच सच्चाई नष्ट हो गई। आज दीन बनकर करूणा कहाँ जाय ? सच तो यह हैं कि आज यह संसार सूना ही हो गया- निःसार हो गया। सचमुच परोपकारी प्राणी संसार को आलोकित करने वाला प्रदीप हैं।

हर्ष का नाट्यवैशिष्ट्य

हर्ष संस्कृत नाटक कारों में रोमांचक 'प्रणय-नाटिका ' के निर्माता के रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध है । उनके ऊपर भास और कालिदास का प्रकृष्ट प्रभाव तथा प्रेरणा अवश्य विद्यमान दिखाई देती हैं । भास ने भी उदयन से सम्बद्व दो नाटकों की रचना की हैं - स्वप्नवासवदत्ता और प्रतिज्ञायौगन्धरायण। इन दोनों नाटकों का प्रभाव विषय की एकता तथा कथानक की अभिन्नता होने के कारण हर्ष की इन दोनों नाटकों के ऊपर पड़ा हैं। इस प्रकार कालिदास के नाटकों की भी घटनाओं, वर्णनों तथा वार्तालापों में विशेष साम्य दृष्टिगोचर होता हैं- विशेषतः मालविकाग्निमित्र का, इस प्रकार हर्ष की मौलिकता तथा नवीन कल्पना में किसी प्रकार का सन्देह दृष्टिगोचर नहीं होता है।

रोमान्टिक ड्रामा के जितने कमनीय तथा उपादेय साधन होते हैं, उन सब का उपयोग हर्ष नें इन रूपकों में किया हैं। कालिदास के ही समान हर्ष भी प्रकृति और मानव के पूर्ण सामंजस्य के पक्षपाती हैं। मानव-भाव को जाग्रत करने के लिये दोनों नें प्रकृति के सभी पक्षों के साथ सुन्दर परिस्थिति उत्पन्न की है। 'कामोत्सव' के द्वारा पूर्ण आनन्द का साम्राज्य जब चारों और व्याप्त हों जाता है, तब सागरिका और उदयन के प्रथम दर्शन की अवतारणा की जाती है। गौरी के मन्दिर में वीणावादन की माधुर्य से शान्त वातावरण में जीमूतवाहन मलयवती को पहली बार देखता है। इस प्रकार स्थान, ऋतु तथा सामग्री उपस्थित कर हर्ष ने रोमांचक प्रणय के उन्मेष के लिये उपयुक्त अवसर प्रदान किया है। इस प्रकार वे प्रणय-नाटिका के प्रथम सफल नाटककार है । 'गर्भांक' की योजना उनकी दूसरी शास्त्रीय विशेषता है जिसका अनुसरण भवभूती ने उत्तररामचरित में और राजशेखर ने बालरामायण में बड़े कौशल से किया है।

हर्ष की काव्यशैली सरल तथा सुबोध है। उनका वर्णन इतना विशद है कि पूरा दृश्य आँखों के सामने से गुजरता हुआ दिखाई पड़ता है। रत्नावली में होली का चमत्कारिक वर्णन अन्यत्र अपनी समानता नहीं रखता। नागानन्द का आश्रमवर्णन भी बड़ा सुन्दर, सरस तथा नैसर्गिक है। इस प्रकार काव्यकला तथा नाट्यकला-उभय दृष्टियों से हर्ष एक सफल कवि तथा रूपक-निर्माता हैं (रत्नावली 3।13) -

किं पास्य रूचिं न हन्ति नयनानन्द विधते न किं पद्मस्य
वृद्धिं वा झषकेतनस्य कुरूते नालोकमात्रेण किम्।
वक्त्रेन्दौ तव सत्ययं यदपरः शीतांशूरूज्जृम्भते
दर्पः स्यादमृतेन चेदिह तवाप्यस्त्येव बिम्बाधरे।।

राजा उदयन सागरिका से कह रहा है कि तुम्हारे चन्द्रवदन के रहने पर यह दूसरा चन्द्रमा क्यों उदय ले रहा है ? उदय से यह अपनी जड़ता क्या नहीं प्रदर्शित करता ? इसके उदय होने की

जरूरत ही क्या थी ? तुम्हारा मुख क्या कमल की शोभा को नहीं नष्ट कर देता? क्या वह नेत्रों को आनन्द नहीं देता? देखें जाने से ही क्या वह काम -वासना को प्रबल नही बनाता ? चन्द्रमा के कार्य विदित है। वे तो तेरे मुख में भी विद्यमान है यदि अमृत धारण करने के कारण चन्द्रमा को गर्व है, क्या तेरे बिम्बाधर में सुधा नही है तब फिर तुम्हारे चन्द्रवदन के सामने चन्द्रमा के उदय लेनें की क्या जरुरत है यह पद्य काव्यप्रकाश में उद्धृत किया गया है।

अभ्यास प्रश्न 1

अति - लघुत्तरीय प्रश्न -

1. हर्षवधर्न के माता -पिता का क्या नाम था।
2. हर्षवर्धन की वहिन का क्या नाम था।-
3. दिवाकर का जन्म किस जाति में हुआ था।
4. महाकविपद्यगुप्त किस शताब्दी में उत्पन्न हुए।
5. नागानन्द नाटक के रचयिता कौन है।
6. संस्कृत साहित्य के प्रथम नाटिका का क्या नाम है।
7. प्रियदर्शिका के पिता का क्या नाम था।
8. रत्नावली के नायक कौन है।
9. नागानन्द मे कुल कितने अंक हैं।
10. नागानन्द का नायक कौन है।
11. जीमूतवाहन मलयवती को पहली बार कहॉ देखता है।
12. उदयन ने चन्द्रमा की बराबरी किसके साथ की है।
13. - हर्ष की प्रशंसा ‘ श्रीहर्ष ’ कहकर किसने किया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हर्षवर्धन के ज्येष्ठ भ्राता का नाम था-

(क)- बाण भट्ट (ख) राज्यवर्धन

(ग)- मयूर भट्ट (घ) शशांक

2 - हर्षवर्धन ने अपने सुदृढ़ तथा राज्य काल ई०से लेकर ०तक माना जाता है -

(क) 601 से 605 तक (ख) 606 से 647 तक

(ग) 510 से 525 तक (घ)525 से 560 तक

(3) हर्षवर्धन ने रचना की है -

(क) प्रिय दर्शिका (ख) नागान्द

(ग) रत्नावली (घ) दनमें सभी

(4) रत्नावली की नायिका है-

(क) रत्नावली (ख) मनोरमा

(ग) सागरिका (घ) इनमें सभी

(5) - दृढ़वर्मा की पुत्री का नाम था-

(क) प्रियदर्शिका (ख) सगरिका
(ग) रत्नावली (घ) मनोरमा
(6)- प्रियदर्शिका में कुल अंक है-
(क) तीन (ग) चार
(ख) सात (घ) गध
(7) रत्नावली है-
(क) नाटक (ग) पघ
(ख) नाटिका (घ) गघ
(8) नागानन्द मे कुल अंक है-
(क) तीन (ग) आठ
(ख) दी (घ) पाचं

2.5 सारांश

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप जान चुके है की श्री हर्ष के माता पिता का नाम क्या था। श्री हर्ष का व्यक्तित्व महान था , महाराजा हर्षवर्धन केवल धीर वीर लक्ष्मी के उपासक न थे , अपितु ललित कलाओं के भी अत्यन्त प्रेमी थे। महाराजा हर्ष के कृति के रुप में तीन ग्रन्थ प्राप्त होते है - प्रियदर्शिका 2- रत्नावली 3- नागानन्द इन तीनो ग्रन्थों में घटनाओं का आश्चर्य जनक साम्य है रत्नावली में सागरिका अपने चित्तविनोद के लिए राजा की चित्र खींचती है। नागानन्द में जीमूतवाहन उसी उद्देश्य से मलयती का चित्र बनाता है दोनो स्थानों पर चित्रो के द्वारा ही पात्रों के स्निग्ध हृदय तथा प्रणय की कथा का परिचय दर्शको को प्राप्त है। इस इकाई में इन तीनों ग्रन्थों का सम्यग् रुप से वर्णन किया गया है। हर्ष संस्कृत नाटककारों में रोमांचक प्रणय - नाटिका के निर्माता के रुप में प्राप्त होते हैं हर्ष की मौलिकता तथा नवीन कल्पना के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नही प्राप्त होता है।

2.6 शब्दावली

शब्द	अर्थ
भ्राता	भाई
भ्रातवध	भाई का वध
शर्त्रवः	शत्रुओं ने
अधे	आह
प्रभाव:	प्रभाव
वाग्देव्या	सरस्वती देवी
दिवाकर:	सूर्य
श्री हर्षस्य	श्री हर्ष का
अभणत्	हुआ

सम्य्:	अच्छा
समः	समान
वाणमयुरयों	वाण मयुर का
श्री हर्ष इव	श्री हर्ष जैसा
काव्य चातुरी	काव्य में चतुर
पर्याप्तः	पर्याप्त
अस्य	इसका
विततार	फैलाया
समर्पितानि	समर्पित किये
परिम्लानताम्	मलिन
नभसः	आकाश
प्रयाते	चले जाने पर
मुकत्वा	छोड़कर
बाह्य	बाहर
किंम्	क्या

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1-

अति - लघुत्तरीय प्रश्न - 1- प्रभाकर वर्धन तथा यशोमति 2- राज्य श्री 3- चाण्डाल 4- दशवीं शताब्दी 5- महाराज हर्ष 6- रत्नावली 7- विजय सेन 8- उदयन 9- पॉच 10- जीमूत वाहन 11- गौरी मन्दिर में 12- सागरिका के मुख से 13- सोड़ढ़ल ने

बहुविकल्पीय प्रश्न - 1- ख 2- घ 3- घ 4- क 5- क 6- ख 7- ख 8- ख।

2. 8 सदर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ नाम लेखक प्रकाशक

1- संस्कृत साहित्य का इतिहास . बलदेव उपाध्याय प्रकाशक - शारदा निकेतन , सिगरा वाराणसी

2. 9 उपयोगी पुस्तकें

1- संस्कृत साहित्य का इतिहास . बलदेव उपाध्याय प्रकाशक - शारदा निकेतन ,सिगरा वाराणसी

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1-हर्ष वर्धन का परिचय दीजिये।

2- हर्ष की रचनाओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।